जंगल के जुगनू : उपन्यास : देवेश ठाकूर

डॉ. अशोक साळुंखे,
एल.जी.एम. कॉलेज, मंडणगड, जि. रत्नागिरी.

उपन्यास की कथावस्तु :

देवेश ठाकूर हिंदी के एक जाने-माने उपन्यासकार हैं। 'जंगल के जुगनू' देवेश ठाकूर का एक लोकप्रिय उपन्यास है। इसमें उपन्यासकार ने समाजसेवा से प्रेरित डॉ. देवांगी तथा डॉ. पलक शिवशंकरन् नामक दो महिलाओं की कहानी प्रस्तुत की है। डॉ. देवांगी गांधी कॉलेज में लिट्रेचर, तो डॉ. पलक सेक्सरिया कॉलेज में कैमिस्ट्री की प्रोफेसर हैं। दोनों भी अपने व्यक्तिगत जीवन में उपेक्षित तथा टूटी हुई हैं। अपने से ज्यादा दुखियों के दुखों को कम करने की कोशिश करते हुए वे समाजसेवा में जुट जाती हैं। डॉ. देवांगी ने 'सहयोग' नामक एक संस्था की स्थापना की है, जिसके माध्यम से वह कांदिवली के पास होने वाले गांधीनगर की झोपडपट्टियों में रहनेवाली गरीब महिलाओं की पीडाओं को कम करने का प्रयास करती है। बस्ती के पढे-लिखे नौजवानों की मदद से वह गरीब, असहाय तथा पीडित महिलाओं का संगठन बनाती है। कितनी ही विधवा तथा परित्यक्ता स्त्रियों को वह आस-पास की बिल्डिंगों में घरेलू काम दिलवाती है। देवांगीजी की प्रेरणा से दो डॉक्टर बारी-बारी से बस्ती में आते हैं और इन महिलाओं की छोटी-मोटी बीमारियों का इलाज करते हुए उन्हें मुफ्त में दवाइयां बांटते हैं तथा गंभीर मरीजों को कॉरपोरेशन के अस्पतालों में दाखिल करवाते हैं। कलेक्टर से संस्था के नाम जमीन लेकर वह गांधीनगर में लडकियों के लिए एक स्कूल खोलने में प्रयत्नशील रहती है।

डॉ. पलक शिवशंकरन् भी देवांगीजी से प्रभावित होकर समाजसेवा की ओर अग्रसर होती हैं। उन्हें अपनी बडी बहन तथा अपना गॉड फादर मानते हुए वह बडी लगन से उनसे जुडी रहती है तथा अपनी ओर से दुखियों की सेवा में लगी रहती है। देवांगीजी के निकट संपर्क से वह अपनी कमजोरियों को कम करती है तथा समाज की ओर देखने का एक नया दृष्टिकोण प्राप्त करती है। देवांगी की बीमारी तथा उनके अंतिम दिनों में वह हमेशा उनके साथ रहती है तथा उनकी हर संभव मदद करती है। उनकी मृत्यु के बाद वह 'सहयोग' की पूरी जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाती है तथा देवांगी के अधूरे सपने को पूरा करने में प्रयत्नशील रहती है। संस्था के लिए आर्थिक मदद मांगने के लिए वह कितने ही लोगों के पास पहुंचती है तथा अपनी योजना बताकर उनसे आर्थिक सहयोग प्राप्त कर लेती है। इसी बीच उन्हें अनेक अच्छे-बुरे अनुभवों से गुजरना पडता है। फिर भी वह हिम्मत नहीं हारती है और पूरी लगन से समाज की सेवा में जुट जाती है। इसके लिए वह कॉलेज में पढनेवाली कई लडकियों की भी मदद लेती है।

वास्तव में हमारा देश इतना बडा है, जहां पर सभी चीजें आसानी से उपलब्ध होती हैं। भारत के अलावा शायद ही कोई देश होगा, जिसके गोदाम अन्न से भरे हुए होंगे। फिर भी यहां के लोग भूख से मर रहे हैं। बाजारीकरण तथा वैश्वीकरण ने इस देश के गरीब को और गरीब बना दिया है। यहां पर बाल-विवाह, सती-प्रथा, जातिवाद, अत्याचार तथा भ्रष्टाचार जैसी कितनी ही अनुचित बातें दिखाई देती हैं,

जिनका उत्तर ढूंढने की आवश्यकता है। लेकिन सरकार इस संबंध में मौन रहती है। वास्तव में सरकार को ही कई कडे कदम उठाते हुए इन गरीबों के जीवन में स्थायी रोशनी लाने का प्रयास करना चाहिए। परंतु केवल 'गरीबी हटाओ', 'जय जवान-जय किसान' जैसे नारे देने के सिवा वह कुछ भी नहीं कर पा रही है। आम जनता के हित में न तो कोई ईमानदारी से सोचता है, और न कुछ करता है। उनके लुभावने नारों से गरीबों के पेट की आग नहीं बुझ पाती है। आजादी के बाद देश का विकास जरूर हुआ, परंतु इस विकास का फल केवल कुछ इने-गिने धनवानों की मुठ्ठियों में जाकर बंद हो गया। सूचना-तकनीक का विकास जरूर हुआ, परंतु आम जनता को इसका कोई फायदा नहीं हुआ। क्योंकि उनके पास एक अखबार तक खरीदने का सामर्थ्य नहीं है। यहां पर दिन दहाडे जनता पर अमानुषिक अत्याचार हो रहे हैं। चंद सिक्कों के लिए औरतों को जिंदा जलाया जा रहा है तथा आदिवासियों का निरंतर शोषण किया जा रहा है। इसी जनतंत्र में उपजे भ्रष्टाचार के पौधे ने आज वटवृक्ष का रूप ग्रहण कर लिया है।

ऐसी विपरित अवस्था में कुछ चंद समाज-सुधारक क्या कर सकते हैं? भले ही वे समाज की सेवा के लिए अपना तन, मन और धन-सबकुछ अर्पित कर देते हैं, फिर भी उनकी अपनी मर्यादा है। देश के सारे गरीबों तक तो वे नहीं पहुंच पाते हैं। वे गरीबों के जीवन में उजाला फैलाना चाहते हैं, परंतु वे तो केवल एक टिमटिम करनेवाले जुगनू हैं। जुगनू केवल जलते-बुझते रहते हैं। केवल टिमटिमा सकते हैं, लेकिन स्थायी रोशनी देकर उनके जीवन का अंधेरा पूरी तरह से नहीं मिटा सकते हैं। डॉ. देवांगी तथा पलकजी की अवस्था भी इन्हीं जुगनूओं के समान बन गई है। अपने मन की शांति के लिए वे यह सब कुछ कर रही हैं। गरीबों को थोडीसी राहत देकर उन्हें सुख मिलता है और इसी सुख के लिए ही वे हमेशा समाजसेवा में जुटी रहती हैं। इसीकारण ही डॉ. देवांगी अपनी कविता में लिखती हैं-

''हम सूरज की ज्योति नहीं है

हम उजियाले के सोत नहीं है

हम तो जंगल के जुगनू हैं।.....

सूरज लाए कौन यहां

चंदा लाए कौन यहां

हम तो टिमटिम करते

जंगल के जुगनू हैं।''

उपन्यास की कथावस्तु सुगठित है। डॉ. पलक अपने पूर्वजीवन की घटनाओं को याद करते हुए आत्मकथनात्मक पद्धति से व्यक्त करती हैं। उपन्यास में डॉ. पलक शिवशंकरन् तथा डॉ. देवांगी प्रमुख पात्र हैं, तो पलक की मां, पिताजी, बहन सब्बू तथा डॉ. बिजॉय घोष आदि गौण पात्र हैं।

उपन्यास में चरित्र-चित्रण :

१. डॉ. पलक शिवशंकरन् :

कथानायिका डॉ. पलक शिवशंकरन् सेक्सरिया कॉलेज में कैमिस्ट्री विभाग की हेड के रूप में कार्यरत हैं। पिछले ३६ सालों से वह पढाने का काम कर रही हैं। जीवन की ५८ वर्ष की इस यात्रा में उन्हें कितने ही अभाव, कितने ही अपमान, उपेक्षाएं तथा अकेलेपन को सहन करना पडा था। इसी बीच वह डॉ. देवांगी के संपर्क में आती हैं और 'सहयोग' संस्था के माध्यम से गांधीनगर की झोपडपट्टियों में रहनेवाले गरीब लोगों की सहायता करने में जुट जाती है। 'सहयोग' संस्था ने मानो उनके एकाकी जीवन में सद्भावना का एक हाथ आगे बढाया था, जिससे उनके जीवन का अंधेरा थोडा-सा नष्ट होकर उसमें उजाला फैल गया था। ऐसे में जब उन्हें संकल्प प्रतिष्ठान, कोल्हापुर की ओर से उनके सामाजिक कार्यों के लिए 'महाराष्ट्र मनीषा' पुरस्कार से सम्मानित किया गया, तब उन्हें लगता है कि उनका जीवन सार्थक हो गया।

डॉ. पलक का ननिहाल तिरची में था। इसी छोटे-से शांत कस्बे में वह अपनी छोटी बहन सब्बू के साथ बडी हो गयी थीं। उसकी मां बरसों पहले अपने मामा के पास मुंबई आ गई थी। मामा ने ही म्युनिसिपैलिटी के एक स्कूल में उसे नौकरी दिलायी थी। पिताजी अप्पा तो पहले से ही मुंबई में रहते थे। वे एक मिल में मैकेनिक थे। मामा की कोशिशों से ही मां की शादी अप्पा से हो गई थी। लेकिन उनका वैवाहिक जीवन बिल्कुल अच्छा नहीं रहा। मां के घमंडी स्वभाव के कारण अप्पा को बार-बार अपमानित होना पडता था। उसे अपने भाईयों पर बडा गर्व था। क्योंकि वे अच्छी पोस्ट पर नौकरियां कर रहे थे। मां पिताजी से ज्यादा कमाती थी। इसकारण वह उन्हें बार-बार ताने मारती रहती थी। मां ने उनके जीवन को मानो नरक बना दिया था। केवल कहने के लिए ही वे जिंदा हैं। शादी के बाद पहले दिन से ही उनमें संघर्ष हो रहा था। दोनों की सोच कभी भी एक-दूसरे से नहीं मिल सकी। मिल की नौकरी छूटने पर पिताजी को अक्सर मां की गालियां सुननी पडती थी। लेकिन फिर भी पिताजी सब कुछ सहन कर लेते थे। अपने से जितना बनता था, उतना वे कर देते थे। मिल से कर्जा उठाकर उन्होंने बब्बो की शादी करा दी थी। अनेकों के हाथ-पैर पकडकर उन्होंने ही बब्बो को मद्रास कारपोरेशन के स्कूल में नौकरी दिलायी थी। मां की बातों से तंग आकर वे मद्रास जाकर बब्बो के पास रहने लगते हैं।

बडी बहन बब्बो की शादी उसके छोटे मामा के साथ मद्रास में हो गई थी। शादी के समय वह केवल पंद्रह-सोलह साल की थी। इस शादी के बाद ही मां पलक तथा सब्बू को अपने पास मुंबई बुलाती है। तब पलक ने आठवीं, तो सब्बू ने पांचवी पास कर ली थी। तिरची के एक छोटेसे मुहल्ले से उठकर दोनों बहनें मुंबई के विस्तार में पूरी तरह से खो जाती हैं। अंधेरी की चाल के एक अंधेरे कमरे में पलक बडी घुटन का अनुभव करती थी। उसे बार-बार तिरची का खुलापन, अपने साथी तथा मौसी की याद आ जाती। मां और मौसी-दोनों के स्वभाव एकदम भिन्न थे। कॉरपोरेशन के स्कूल में टीचर होने के कारण मां घर में भी स्कूल जैसा अनुशासन चाहती थी। हर बात में वह टोकती रहती थी और हमेशा आदेश देती थी। लेकिन मौसी

कभी भी बच्चों नहीं डांटती थी। विधवा और निःसंतान होने पर भी बहन के बच्चों से बहुत प्रेम करती थी। फिर भी, एम. एसस्सी की पढाई पूरी होने तक पलक अपनी मां के साथ वहीं पर रहती है।

डॉ. पलक शुभम् के साथ विवाहबद्ध होती है लेकिन केवल पांच वर्ष के अल्पसमय में ही उनका वैवाहिक जीवन पूरी तरह से टूटकर बिखर जाता है। सरदर्द से परेशान होकर शुभम् ऑफिस से जल्दी घर लौटता है और सरदर्द से छुटकारा पाने के लिए एक एस्प्रीन की गोली खाकर सो जाता है। लेकिन वह बाद में जाग ही नहीं पाता हैं, हमेशा के लिए सो जाता है। शुभम् की अचानक हुई इस मृत्यु से पलक का पूरा जीवन ध्वस्त हो जाता है। अभी-अभी उसने अपनी जिंदगी की शुरूआत की थी, तभी सब कुछ उलट-पुलट हो गया था। बेटा श्रीराम तब मुश्किल से तीन साल का रहा होगा। पलक के पेट में राज्यश्री पल रही थी। इतनी बडी दुनिया में वह अकेली पड गयी। कहने के लिए माँ-बाप तथा बहनें थीं, परंतु सभी अपने-अपने कामों में उलझें हुए थे। शादी के बाद पलक अपने पति के साथ किराए के फ्लैट में रहने लगी थी। फ्लैट का मालिक उसके अकेलेपन का फायदा उठाने का भी प्रयास करता था। ठीक इसी समय देवांगी दीदी ने पलक के जीवन में प्रवेश किया और उसे समाजसेवा की ओर मोड दिया।

पलक ने शादी से पहले ही अपनी पीएच. डी. पूरी की थी। उसके पिताजी अप्पा बब्बो के पास मद्रास चले गए थे। अब अंधेरी की चाल के कमरे में सब्बू मां के साथ रहती थी। मां की नौकरी का अंतिम साथ चल रहा था। तभी कॉरपोरेशन ने अपने स्टाफ के लिए घाटकोपर में एक कालोनी बनवाई। शुभम् ने मां से भी ॲप्लिकेशन भरवा दिया था। संयोग से लॉटरी में मां का नंबर निकल आता है। लेकिन इसके लिए कॉरपोरेशन को चालीस हजार रूपये पहले देने थे। मां दस हजार से ज्यादा देने के लिए तैयार नहीं थी। शुभम् ने अपने ऑफिस से किसी तरह तीस हजार का इंतजाम किया और मां के नाम पर फ्लैट ले लिया। दुर्भाग्य से फ्लैट का कब्जा मिलने से पहले ही शुभम् इस दुनिया को छोडकर चला जाता है। पलक ने सोचा था कि उसकी मां तथा मौसी उनके साथ इस नये फ्लैट में रहेंगी। वे दोनों उनके बच्चों की देखभाल भी कर लेंगी। परंतु उसका सारा प्लानिंग चौपट हो जाता है। फ्लैट तैयार होने के बाद मां, मौसी और सब्बू नये फ्लैट में रहने लगती हैं। पलक भी उसी फ्लैट में शिफ्ट होती है। यहीं पर उसकी दूसरी बेटी राज्यश्री का जन्म होता है।

वास्तव में फ्लैट की लगभग सारी रकम खुद पलक ने ही भरी थी, केवल दस हजार उसकी मां के थे। परंतु मां के नाम पर फ्लैट होने के कारण वह लोगों को बताती थी कि यह मेरा ही फ्लैट है। बेचारी पलक को मैं यहां अपने पास लेकर आयी हूँ। यह सुनकर पलक को बडा दुःख होता था। वह यह भी बताती थी कि इस फ्लैट का नॉमिनेशन भी मैंने पलक के ही नाम कर दिया है। लेकिन बाद में नॉमिनेशन में पलक के नाम के साथ अन्य दानों बहनों का नाम भी डाल दिया जाता है। वास्तव में दोनों बहनों का इस फ्लैट से कोई संबंध नहीं था। मां की मृत्यु के बाद दोनों बहनों को समझाकर पलक फ्लैट को अपने नाम करवा देती है। पलक अपने माता-पिता से असीम प्रेम करती है। इसीकारण ही तीनों बहनें मिलकर अपनी अम्मा-अप्पा की शादी की पचासवीं सालगिरह-शादी की गोल्डन जुबली मनाती हैं।

पलक ने ही स्वयं पैसों का जुगाड करते हुए अपनी छोटी बहन सब्बू की शादी करा दी थी। उसका पति राजन फोटोग्राफर था। शादी के बाद सब्बू अपने पति राजन के साथ एन-टॉप हिल के फ्लैट पर अपने ससुराल चली जाती है। वास्तव में सब्बू मां की बडी प्रिय लडकी थी। मीठी-मीठी बातें बनाकर वह मां से अपना काम निकालती थी। शादी के समय वह मां को पटाती है और उससे कुछ भारी गहनें प्राप्त करती है। तीनों बहनों में वह बडी चालाक और केलकुलेटिव थी। शादी के बाद भी वह मां-पिताजी से अच्छे संबंध बनाए रखती है, ताकि समय आने पर वे उसकी मदद कर सकें। अपने नये फ्लैट के लिए वह मां से एक लाख से भी ज्यादा रूपये प्राप्त कर लेती है। पहला बच्चा होने पर वह पिताजी को मद्रास से अपने पास बुला लेती है और उन्हें घर तथा बच्चे की रखवाली की जिम्मेदारी सौंपती है।

डॉ. पलक एक ओर अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाती हैं, तो दूसरी ओर समाजसेवा में लगी रहती हैं। देवांगीजी से उसने समाज की ओर देखने का एक नया दृष्टिकोण प्राप्त किया था। देवांगीजी से प्रभावित होकर ही वह समाजसेवा की ओर अग्रसर हुई थीं। उन्हें अपनी बडी बहन मानते हुए पलक बडी लगन से उनसे जुडी रहती तथा अपनी ओर से दुखियों की सेवा में लगी रहती। देवांगीजी के निकट संपर्क से वह अपनी कमजोरियों को कम करती है। देवांगी की बीमारी तथा उनके अंतिम दिनों में वह हमेशा उनके साथ रहती है तथा उनकी हर संभव मदद करती है। उनकी मृत्यु के बाद वह 'सहयोग' की पूरी जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाती है तथा देवांगी के अधूरे सपने को पूरा करने में प्रयत्नशील रहती है। संस्था के लिए आर्थिक मदद मांगने के लिए वह कितने ही लोगों के पास पहुंचती है तथा अपनी योजना बताकर उनसे आर्थिक सहयोग प्राप्त कर लेती है। इसी बीच उन्हें अनेक अच्छे-बुरे अनुभवों से गुजरना पडता है। फिर भी वह हिम्मत नहीं हारती है और पूरी लगन से समाज की सेवा में जुट जाती है। इसके लिए वह कॉलेज में पढनेवाली कई लडकियों की भी मदद लेती है। उसके इस समाजकार्य के लिए उसे संकल्प प्रतिष्ठान, कोल्हापुर इस संस्था के द्वारा 'महाराष्ट्र मनीषा' पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

इसप्रकार उपन्यास में डॉ. पलक शिवशंकरन् के चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

१. डॉ. देवांगी :

डॉ. देवांगी शहर के उच्च वर्गीय व्यवसायी की इकलौती बेटी है। घर में नौकर-चाकर थे, पढाई तथा नृत्य के लिए घर में टीचर आते थे। किसी भी बात की कोई कमी नहीं थी। केवल एक मां की कमी थी, जो देवांगी को जन्म देकर साल भर बाद चल बसी थी। बहुत मन्नत के बाद पैदा होने के कारण ही उसे देवांगी यह नाम दिया गया था। बेटी के पालन-पोषण की चिंता के कारण पिताजी ने दूसरी शादी नहीं की थी। देवांगी की कॉलेज की जिंदगी भी बहुत मजे में कटी थी। एम. ए. की पढाई तक अक्सर वह पहला अथवा दूसरा स्थान पाती थी। कभी-कभी सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लेती थी। अपनी सहेलियों के बीच वह बहुत लोकप्रिय थी। बी. ए. के फाइनल इयर की पढाई के दौरान कॉलेज के वार्षिक समारोह में

उसने हनुमंत नायडु की एक गजल गाई थी, जिसे सुनकर कॉलेज के ट्रस्टी सूरजभान बाफना बडे प्रभावित होते हैं और अपने इकलौते बेटे अशोक के लिए उसका हाथ मांगते हैं।

सूरजभानजी कई मिलों के मालिक थे। उनके कई व्यवसाय थे। उनका बेटा अशोक उसी साल अमेरिका से बिजनेस मैनेजमैंट की डिग्री लेकर लौटा था। देवांगी को देखते ही वह भी उस पर मोहित हो जाता है। लेकिन देवांगी एम. ए. पूरा होने से पहले शादी के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थी। उसके पापा भी इतने अमीर घराने में बेटी की शादी नहीं करना चाहते थे। लेकिन पिता-पुत्र की जिद के कारण पिताजी कुछ भी नहीं कर पाते हैं और शादी के लिए तैयार हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि अशोक भी उसके पिताजी के समान ही शालीन और सद्‌विचारों वाला होगा। धीरे-धीरे देवांगी भी अशोक को पसंद करने लगती है और कुछ ही दिनों में दोनों की शादी करा दी जाती है।

लेकिन शादी के बाद उनका मोह-भंग हो जाता है। अशोक की असलियत धीरे-धीरे सामने आने लगती है। वह बाहर से जितना शालीन और सभ्य लगता था, भीतर से उतना ही कठोर और कामुक था। वह केवल देवांगी के शरीर से प्रेम करता था। मानो एक खिलौना, जिससे वह जब चाहे खेल सकता था। बाद में पता चलता है कि दूसरी औरतों के साथ भी उसके संबंध थे। रोज नामक एक अमेरिकन लडकी से उसने शादी की थी और बाद में डाइवोर्स भी ले लिया था। रोज ने एक बच्चे को भी जन्म दे दिया था। इन सारी बातों से देवांगी बहुत ही डिस्टर्ब रहने लगती है। सूरजभानजी सोचते थे कि देवांगी जैसी सुसंस्कारी लडकी से शादी होने के बाद अशोक सुधर जाएगा, परंतु ऐसा नहीं हो सका। इससे वे बडे दुखी बनते है। उन्हें लगता है कि उनके कारण ही देवांगी जैसी लडकी पर कितना बडा अन्याय हुआ है। अंत में हार कर उन्होंने अशोक को अपनी संपत्ति से बेदखल कर दिया और सारी संपत्ति देवांगी के नाम करा दी। देवांगी को वे समझाते हैं कि मैंने एक बेटा खो दिया है, लेकिन बदले में एक सुशील बेटी को प्राप्त कर लिया है। सूरजभानजी की प्रेरणा से ही देवांगी 'सहयोग' नाम की संस्था स्थापित करती है और दुखियों की सेवा में अपना मन लगाती है।

अशोक को तो घर से निकाल दिया गया, लेकिन उसका बेटा देवांगी के पेट में पल रहा था। सूरजभान देवांगी को सलाह देते हैं कि वह इस गर्भ को गिरा दे। क्योंकि भविष्य में उनकी मृत्यु के बाद अशोक फिर वापस लौटैगा और अपनी संतान के बहाने देवांगी को तंग करेगा। अपने बदमाश बेटे की कोई भी निशानी वे अपने घर में रखना नहीं चाहते थे। लेकिन देवांगी इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं होती है। बाबूजी की मर्जी के खिलाफ वह सुहास नामक बेटे को जन्म दे देती है। सूरजभानजी का गुस्सा अब भी ठंडा नहीं हुआ था। वे देवांगी को बताते हैं कि अशोक के बेटे को वह कभी भी उनके सामने मत ले आये। क्योंकि उस बच्चे में उन्हें अशोक का ही चेहरा दिखाई देता है। लेकिन अपने अंतिम दिनों में बाबूजी सुहास को बडे प्रेम से अपने पास सुलाते हैं और खुद हमेशा के लिए सो जाते हैं।

इसी बीच डॉ. देवांगी की डॉ. बिजॉय घोष से मुलाकात हो जाती है। छोटे सुहास की बीमारी का इलाज करने के लिए वह डॉ. घोष के क्लिनिक में चली जाती थी। बातों-बातों में उन्हें पता चलता है कि डॉ. देवांगी शहर के विख्यात व्यवसायी सूरजभान की पुत्र-वधू है। स्वयं डॉ. घोष ने 'सूरजभान चॅरिटेबल ट्रस्ट' द्वारा दी गई आर्थिक सहायता से ही अपनी डॉक्टरी की पढाई पूरी की थी। अतः सूरजभानजी के प्रति उनके मन में बडी श्रद्धा की भावना थी। वे देवांगी को बताते हैं कि अब सुहास को दिखाने के लिए तुम्हें क्लिनिक में आने की कोई जरूरत नहीं है। वे खुद देवांगी के बंगले पर आकर सुहास की बीमारी का इलाज करेंगे। तब से देवांगी के बंगले पर उनका आना-जाना शुरू हो जाता है। सुहास की जाँच-परख के बाद वे देर तक बाबूजी के पास बैठकर इधर-उधर की बातें करते रहते।

धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे के निकट आने लगे। दोनों साथ-साथ बाहर भी जाने लगे। कभी थियेटर में तो कभी सेमिनार में वे दोनों साथ चले जाते। डॉ. घोष की निकटता देवांगी को भी अच्छी लगने लगी थी। कभी-कभी देवांगी को लगता कि क्या उसका यह आचरण ठीक है? बाद में उसे लगता कि उसकी जिंदगी उसकी अपनी जिंदगी है। उसे वह चाहे जैसे जी सकती है। सुहास तथा बाबूजी उसके जीवन के अकेलेपन को नहीं भर सकते हैं। डॉ. घोष अगर उसके अकेलेपन को कम कर सकते हैं, तो उनके साथ संबंध रखने में क्या बुराई है? लेकिन एक दिन डॉ. घोष देवांगी को बताते हैं कि उसका पति अशोक उन्हें बार-बार धमकी भरे पत्र लिखता है। देवांगी के साथ उनका घूमना-फिरना उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है। यह सुनकर देवांगी सोचती है कि अशोक कुछ भी कर सकता है। उसके कारण डॉ. घोष की जान को खतरा भी हो सकता है। और यह वह कभी भी सहन नहीं कर सकती है। इसके बाद दोनों का मिलना-जुलना लगभग बंद हो जाता है।

डॉ. देवांगी फिर से अकेली पड जाती है। वह अक्सर बीमार पडने लगती है। टाटा हॉस्पिटल में जब वह अपनी जाँच करवाती है, तब पता चलता है कि उसे ब्लड कैंसर है। अब थर्ड स्टेज चल रही है। डॉक्टर ने उसे अस्पताल में दाखिल होने की सलाह दी थी। परंतु देवांगी अपने घर पर ही शांति से मरना चाहती है। इसकारण अस्पताल जाने से मना कर देती है। वह अपनी 'सहयोग' संस्था की सारी फाईलें डॉ. पलक को सौंप देती है और खुद मृत्यु को गले लगाती है। मृत्यु के समय उसके चेहरे पर शांति की एक अपूर्व आभा थी। उसके अंतिम दर्शन के लिए बंगले के सामने गांधीनगर के हजारों झोपडपट्टिवाले इकट्ठा होकर 'देवांगी दी अमर रहें' के नारे लगा रहे थे। सचमुच, देवांगीजी ने अपना जीवन केवल जीया नहीं था, तो उसे रचा था। जिंदगी तो सभी जीते हैं, लेकिन उसे रचता कोई बिरला ही है। जीवन को रचा जाना ही उसे सार्थक बनाता है। अपने जीवन को सार्थक बनाकर वह हमेशा के लिए चली गई थी।

लेकिन जाने से पहले उसने अपनी कितनीही छात्राओं में समाजसेवा की ज्योत जलाई थी। डॉ. पलक भी देवांगीजी से प्रभावित होकर समाजसेवा की ओर अग्रसर हुई थीं। पलक को अपनी छोटी बहन मानकर देवांगीजी उसमें होनेवाली कमजोरियों को कम करती है तथा उसे समाज की ओर देखने का एक नया

दृष्टिकोण प्रदान करती है। अपने अंतिम दिनों में वह 'सहयोग' संस्था की पूरी जिम्मेदारी पलक को सौंपती हैं और इस दुनिया से हमेशा के लिए विदा लेती है।

इसप्रकार उपन्यास में देवांगीजी के चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

३. <u>डॉ. बिजॉय घोष :</u>

डॉ. बिजॉय घोष उपन्यास के एक गौण पात्र हैं। उनका बचपन गरीबी तथा अभावों में बीता था। उनके माता-पिता मालदा के पास एक गांव में खेती-बारी करते थे। केवल खाने भर का ही उत्पादन हो पाता था। ऐसी स्थिति में परिवार के चार लोगों का पेट पालना बडा ही मुश्किल हो रहा था। तभी गांव में हैजा की बीमारी फैल जाती है और उसमें उनकी बहन तथा मां की मृत्यु हो जाती है। बहन की अबतक शादी भी नहीं हुई थी। इससे पिताजी की अवस्था बडी दयनीय बन गयी। वे इस हादसे को सहन नहीं कर पाते हैं और देखते-देखते उनकी भी मृत्यु हो जाती है। दसवीं में पढनेवाले बिजॉय बिल्कुल अकेले पड जाते हैं। कभी अपने पडोसियों के पास तो कभी गांव-गांव भटककर वे अपनी जीविका चलाने लगे। तभी चाचा उन्हें अपने साथ मुंबई लेकर आ जाते हैं। वे सूरजभान की फैक्टरी में काम करते थे। एक दिन सूरजभानजी बिजॉय से मिलते हैं और उनकी पढाई का सारा खर्चा उठाने की जिम्मेदारी लेते हैं। केवल सूरजभानजी की कृपा से ही वे आज एक सफल डॉक्टर बन गए हैं।

संयोग से डॉ. देवांगी की डॉ. बिजॉय घोष से मुलाकात हो जाती है। देवांगी अपने बेटे सुहास की बीमारी का इलाज करने के लिए डॉ. घोष के क्लिनिक में चली जाती थी। बातों-बातों में उन्हें पता चलता है कि डॉ. देवांगी शहर के विख्यात व्यवसायी सूरजभान की पुत्र-वधू है। स्वयं डॉ. घोष ने 'सूरजभान चॅरिटेबल ट्रस्ट' द्वारा दी गई आर्थिक सहायता से ही अपनी डॉक्टरी की पढाई पूरी की थी। अतः सूरजभानजी के प्रति उनके मन में बडी श्रद्धा की भावना थी। वे देवांगी को बताते हैं कि अब सुहास को दिखाने के लिए तुम्हें क्लिनिक में आने की कोई जरूरत नहीं है। वे खुद देवांगी के बंगले पर आकर सुहास की बीमारी का इलाज करेंगे। तब से देवांगी के बंगले पर उनका आना-जाना शुरू हो जाता है। सुहास की जाँच-परख के बाद वे देर तक बाबूजी के पास बैठकर इधर-उधर की बातें करते रहते।

धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे के निकट आने लगते हैं। दोनों साथ-साथ बाहर भी जाने लगे। कभी थियेटर में तो कभी सेमिनार में वे दोनों साथ चले जाते। डॉ. घोष की निकटता देवांगी को भी अच्छी लगने लगी थी। कभी-कभी देवांगी को लगता कि क्या उसका यह आचरण ठीक है? बाद में उसे लगता कि उसकी जिंदगी उसकी अपनी जिंदगी है। उसे वह चाहे जैसे जी सकती है। सुहास तथा बाबूजी उसके जीवन के अकेलेपन को नहीं भर सकते हैं। डॉ. घोष अगर उसके अकेलेपन को कम कर सकते हैं, तो उनके साथ संबंध रखने में क्या बुराई है? लेकिन एक दिन डॉ. घोष देवांगी को बताते हैं कि उसका पति अशोक उन्हें बार-बार धमकी भरे पत्र लिखता है। देवांगी के साथ उनका घूमना-फिरना उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है। यह सुनकर देवांगी सोचती है कि अशोक कुछ भी कर सकता है। उसके कारण डॉ. घोष की जान को खतरा

भी हो सकता है। और यह वह कभी भी सहन नहीं कर सकती है। इसके बाद दोनों का मिलना-जुलना लगभग बंद हो जाता है और दोनों भी फिर से अकेले पड जाते हैं।

डॉ. घोष देवांगी से असीम प्रेम करते थे। प्रेम को वे ईश्वर और गंगाजल की पवित्रता के समान महत्त्व देते थे। उनके लिए प्यार संसार की एक अत्यंत पवित्र वस्तु है। देवांगी से शादी करके वे अपनी दुनिया बसाना चाहते थे, लेकिन देवांगी का पति अशोक उनके बीच में एक बडी दीवार खडी कर देता है। वे देवांगी को पाने के लिए पुलिस तथा कोर्ट की भी मदद ले सकते थे। परंतु इससे उनके प्रेम में खरोंच लग सकती थी। इसकारण वे देवांगी को भूल जाना ही श्रेयस्कर मानते हैं और अकेलेपन को अपना लेते हैं।

इसप्रकार आकार में छोटा होने पर भी डॉ. घोष का चरित्र पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

४. <u>पलक की मां, पिताजी तथा छोटी बहन सब्बू :</u>

डॉ. पलक की मां बरसों पहले अपने मामा के पास मुंबई आ गई थी। मामा ने ही म्युनिसिपैलिटी के एक स्कूल में उसे नौकरी दिलायी थी। पलक के पिताजी अप्पा तो पहले से ही मुंबई में रहते थे। वे एक मिल में मैकेनिक थे। अंधेरी की चाल में उन्होंने एक कमरा खरीद लिया था। मामा की कोशिशों से ही मां की शादी अप्पा से हो गई थी। लेकिन उनका वैवाहिक जीवन बिल्कुल अच्छा नहीं रहा। मां के घमंडी स्वभाव के कारण अप्पा को बार-बार अपमानित होना पडता था। उसे अपने भाईयों पर बडा गर्व था। क्योंकि वे अच्छी पोस्ट पर नौकरियां कर रहे थे। मां पिताजी से ज्यादा कमाती थी। इसकारण वह उन्हें बार-बार ताने मारती रहती थी। मां ने उनके जीवन को मानो नरक बना दिया था। केवल कहने के लिए ही वे जिंदा थे। शादी के बाद पहले दिन से ही उनमें संघर्ष हो रहा था। दोनों की सोच कभी भी एक-दूसरे से नहीं मिल सकी। मिल की नौकरी छूटने पर पिताजी को अक्सर मां की गालियां सुननी पडती थी। लेकिन फिर भी पिताजी सब कुछ सहन कर लेते थे। अपने से जितना बनता था, उतना वे कर देते थे। अप्पा खुले दिलवाले इंसान थे। पास-पडोस में उनकी अच्छी इज्जत थी। लेकिन घर में मां के सामने वे चुप्पे बने रहते। मिल से कर्जा उठाकर उन्होंने बब्बो की शादी करा दी थी। अनेकों के हाथ-पैर पकडकर उन्होंने ही बब्बो को मद्रास कारपोरेशन के स्कूल में नौकरी दिलायी थी। मां की बातों से तंग आकर वे मद्रास जाकर बब्बो के पास रहने लगते हैं।

बडी बहन बब्बो की शादी के बाद ही मां पलक तथा सब्बू को अपने पास मुंबई बुलाती है। तब पलक ने आठवीं, तो सब्बू ने पांचवी पास कर ली थी। तिरची के एक छोटेसे मुहल्ले से उठकर दोनों बहनें मुंबई के विस्तार में पूरी तरह से खो जाती हैं। अंधेरी की चाल के एक अंधेरे कमरे में पलक बडी घुटन का अनुभव करती थी। उसे बार-बार तिरची का खुलापन, अपने साथी तथा मौसी की याद आ जाती। मां और मौसी-दोनों के स्वभाव एकदम भिन्न थे। कॉरपोरेशन के स्कूल में टीचर होने के कारण मां घर में भी स्कूल जैसा अनुशासन चाहती थी। हर बात में वह टोकती रहती थी और हमेशा आदेश देती थी। लेकिन मौसी

कभी भी बच्चों नहीं डांटती थी। विधवा और निःसंतान होने पर भी बहन के बच्चों से बहुत प्रेम करती थी। फिर भी, एम. एसस्सी की पढाई पूरी होने तक पलक अपनी मां के साथ वहीं पर रहती है।

अप्पा बब्बो के पास मद्रास चले गए थे। इसकारण अब अंधेरी की चाल के कमरे में सब्बू मां के साथ रहती थी। कॉरपोरेशन ने अपने स्टाफ के लिए घाटकोपर में एक कालोनी बनवाई। शुभम् ने मां से भी ॲप्लिकेशन भरवा दिया था। संयोग से लॉटरी में मां का नंबर निकल आता है। लेकिन इसके लिए कॉरपोरेशन को चालीस हजार रूपये पहले देने थे। मां दस हजार से ज्यादा देने के लिए तैयार नहीं थी। शुभम् ने अपने ऑफिस से किसी तरह तीस हजार का इंतजाम किया और मां के नाम पर फ्लैट ले लिया। दुर्भाग्य से फ्लैट का कब्जा मिलने से पहले ही शुभम् इस दुनिया को छोडकर चला जाता है। पलक ने सोचा था कि उसकी मां तथा मौसी उनके साथ इस नये फ्लैट में रहेंगी। वे दोनों उनके बच्चों की देखभाल भी कर लेंगी। परंतु उसका सारा प्लानिंग चौपट हो जाता है। फ्लैट तैयार होने के बाद मां, मौसी और सब्बू नये फ्लैट में रहने लगती हैं। पलक भी उसी फ्लैट में शिफ्ट होती है। यहीं पर उसकी दूसरी बेटी राज्यश्री का जन्म होता है।

वास्तव में फ्लैट की लगभग सारी रकम खुद पलक ने ही भरी थी, केवल दस हजार उसकी मां के थे। परंतु मां के नाम पर फ्लैट होने के कारण वह लोगों को बताती थी कि यह मेरा ही फ्लैट है। बेचारी पलक को मैं यहां अपने पास लेकर आयी हूँ। यह सुनकर पलक को बडा दुःख होता था। वह यह भी बताती थी कि इस फ्लैट का नॉमिनेशन भी मैंने पलक के ही नाम कर दिया है। लेकिन बाद में नॉमिनेशन में पलक के नाम के साथ अन्य दानों बहनों का नाम भी डाल दिया जाता है। वास्तव में दोनों बहनों का इस फ्लैट से कोई संबंध नहीं था। मां की मृत्यु के बाद दोनों बहनों को समझाकर पलक फ्लैट को अपने नाम करवा देती है। अपने अंतिम दिनों में मां बाथरूम में गिर कर पडी थी, जिससे उसकी हड्डी टूट जाती है। महीनों तक वह खाट पर पडी रही। उसके सिर में टयूमर भी था, जिसका ऑपरेशन करना मुश्किल था। धीरे-धीरे उसकी हालत बिगड जाती है और एक दिन वह कोमा में चली जाती है। पलक तथा मौसी उसकी बडी सेवा करती हैं, परंतु एक रात सोते-सोते इस दुनिया से विदा ले लेती है।

पलक स्वयं पैसों का जुगाड करते हुए अपनी छोटी बहन सब्बू की शादी करा देती है। उसका पति राजन फोटोग्राफर था। शादी के बाद सब्बू अपने पति राजन के साथ एन-टॉप हिल के फ्लैट पर अपने ससुराल चली जाती है। अब राजन की फोटोग्राफी की दूकान तेजी से चलने लगी। राजन को लगता है कि सब्बू के साथ विवाह होने के कारण ही उसकी दूकान तेज चल रही है। सब्बू राजन के इस विश्वास का फायदा उठाती है और उसे अपनी मुठ्ठी में कर लेती है। वास्तव में सब्बू मां की बडी प्रिय लडकी थी। मीठी-मीठी बातें बनाकर वह मां से अपना काम निकालती थी। शादी के समय वह मां को पटाती है और उससे कुछ भारी गहनें प्राप्त करती है। तीनों बहनों में वह बडी चालाक और केलकुलेटिव थी। शादी के बाद भी वह मां-पिताजी से अच्छे संबंध बनाए रखती है, ताकि समय आने पर वे उसकी मदद कर सकें। अपने नये फ्लैट के लिए वह मां से एक लाख से भी ज्यादा रूपये प्राप्त कर लेती है। पहला बच्चा होने पर वह

पिताजी को मद्रास से अपने पास बुला लेती है और उन्हें घर तथा बच्चे की रखवाली की जिम्मेदारी सौंपती है।

पलक के पिताजी अप्पा मुंबई आने से पहले उत्तर भारत में रहते थे। उनकी जवानी का अधिकांश समय चंडीगढ, कानपुर, भोपाल तथा बिलासपुर में बीता था। इन सभी शहरों में उन्होंने नौकरियां भी की और आजादी की लडाई में भाग भी लिया था। सन् ४२ के आंदोलन में उन्हें ६ महीने की जेल की सजा भी हो चुकी थी। संस्कारों से वे कट्टर गांधीवादी थे। इसीकारण ही तमिलभाषी होते हुए भी वे हमेशा हिंदी का अखबार पढते थे। आजादी के बाद उनका नाम भी स्वतंत्रता-सेनानियों की सूची में आ गया था और प्रति माह उन्हें पेंशन के रूप में थोडी राशि भी मिलती थी। सब्बू के पास जाने के बाद वे अपने लिए दस-बीस रूपये रखकर बाकी के पैसे सब्बू को दे देते। लेकिन सब्बू के बच्चे बडे होते ही अप्पा फिर से अपनी अंधेरी की चालवाले कमरे में जाकर अकेले रहने लगते हैं। उनकी पत्नी और बच्चे मुंबई में ही रहते थे। फिर भी अप्पा अपने अंतिम दिनों में अकेलेपन की जिंदगी जीने के लिए विवश हो गए थे।

इसप्रकार उपन्यास में पलक की मां, पिताजी तथा उसकी छोटी बहन सब्बू के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। ये चरित्र गौण होते हुए भी उपन्यास की कथावस्तु आगे बढाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- **<u>दीर्घोत्तरी प्रश्न :</u>**
  १. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
  २. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
  ३. ''जंगल के जुगनू' उपन्यास में समाजसेवा से प्रेरित दो महिलाओं की कहानी प्रस्तुत की है'-उपन्यास के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।
  ४. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास के आधार पर डॉ. पलक शिवशंकरन् के चरित्र पर प्रकाश डालिए।
  ५. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास के आधार पर डॉ. देवांगी के चरित्र पर प्रकाश डालिए।
  ६. उपन्यास की डॉ. पलक के परिवार की जानकारी अपने शब्दों में दीजिए।
- **टिप्पणियां :**
  १. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता।
  २. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास की डॉ. पलक शिवशंकरन्।
  ३. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास की डॉ. देवांगी।
  ५. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास की सब्बू।
  ६. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास की पलक की मां।
  ७. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास के पलक के पिताजी।
  ८. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास के डॉ. बिजॉय घोष।

९. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास में चित्रित अध्यापकों का गिरता हुआ स्तर।

१०. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास में चित्रित अध्यापकों की मानसिकता।

११. उपन्यास में चित्रित डॉ. पलक का परिवार।

- **<u>संदर्भ के लिए महत्त्वपूर्ण अवतरण :</u>**

१. ''लेकिन जिंदगी नदी से ज्यादा ऊबड-खाबड होती है। उसमें सुख, संतोष और सौंदर्य के क्षण कम होते हैं झंझावातों, संघर्षों और विडम्बनाओं का परिमाण ज्यादा होता है।'' पृ. ६.

२. ''सच्चे समाज सेवी के लिए विनयशील होना पहली शर्त होती है पलक। हमें उपकृत होना चाहिए उन लोगों का, जो हम पर विश्वास करते हैं, हमें कुछ करने का मौका देते हैं और हमें हमारी सार्थकता का अहसास दिलाते हैं।'' पृ. ५७

३. ''कभी-कभी सच और झूठ के बीच एक बहुत महीन रेखा होती है। अक्सर लोग उसको देख नहीं पाते और झूठ को सच और सच को झूठ मान लेते हैं।'' पृ. ५८

४. ''व्यक्ति जब समाज में प्रतिष्ठित हो जाता है, तो वह अपनी कमियों को भी भुनाने लगता है। गांधीजी ने भी यही किया।'' पृ. ६१

५. ''जिंदगी तो सभी जीते हैं, लेकिन उसे रचता कोई बिरला ही है। जीवन को रचा जाना ही उसे सार्थक बनाता है।'' पृ. ८८

६. ''नींव के पत्थरों के नाम नींव में ही दबे रह जाते हैं और पर जो भवन खडा होता है, उसे ही लोग जानते हैं। दुनिया का यही रिवाज है।'' पृ. १००

७. ''हम तो जंगल के टिमटिम करते जुगनू हैं। जो जलते-बुझते रहते हैं। बस, टिमटिमा सकते हैं, कोई स्थायी रोशनी नहीं दे सकते।'' पृ. ११६

- **<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्न :</u>**

१. 'जंगल के जुगनू' किसका उपन्यास है?-देवेश ठाकुर

२. 'जंगल के जुगनू' किस विधा की रचना है?-उपन्यास

३. 'जंगल के जुगनू' उपन्यास की कथा-नायिका कौन है?-डॉ. पलक शिवशंकरन्

४. उपन्यास कौनसे प्रकार का उपन्यास है?-आत्मकथनात्मक

५. डॉ. पलक शिवशंकरन् को कौनसी संस्था ने सम्मानित किया है?-संकल्प प्रतिष्ठान, कोल्हापुर

६. संकल्प प्रतिष्ठान ने किसे सम्मानित किया है?- डॉ. पलक शिवशंकरन् को

७. संकल्प प्रतिष्ठान ने डॉ. पलक शिवशंकरन् को कौनसा पुरस्कार प्रदान किया है?-'महाराष्ट्र मनीषा' पुरस्कार

८. डॉ. पलक शिवशंकरन् कौनसे कॉलेज में पढाती है?-सेक्सरिया कॉलेज

९. डॉ. पलक शिवशंकरन कितने वर्षों से कॉलेज में पढाती है?-३६ वर्षों से

१०. डॉ. पलक शिवशंकरन् कौनसे विभाग में/कौनसा विषय पढाती हैं?-कैमिस्ट्री

११. डॉ. पलक शिवशंकरन् की उम्र कितनी है?-५८ वर्ष

१२.डॉ. पलक शिवशंकरन् के पति का नाम क्या है?-शुभम्

१३.शुभम् की मृत्यु कौनसे दिन हुई थी?-१२ अगस्त को

१४.शुभम् को कौनसी चीज बडी अच्छी लगती थी?-आइस-क्रीम

१५.शादी के बाद डॉ. पलक किसके फ्लैट में किराए पर रहती हैं?-चेटियार के

१६.घाटकोपर के फ्लैट के लिए मां ने कितने रूपये दिये थे?-दस हजार रू.

१७.शुभम् की मृत्यु के समय श्रीराम कितने वर्षों का था?-तीन साल

१८.डॉ. पलक शिवशंकरन् के बेटे का नाम क्या है?-श्रीराम

१९.श्रीराम कहाँ पर/क्या करता है?-कनाडा में/कम्प्यूटर साइंस का एडवांस कोर्स करता है

२०. डॉ. पलक शिवशंकरन् की बेटी का नाम क्या है?-राज्यश्री

२१. डॉ. पलक शिवशंकरन् के घर में महरी के रूप कौन काम करती है?-नन्दू

२२. डॉ. पलक शिवशंकरन् का ननिहाल कहाँ पर था?-तिरची में

२३. डॉ. पलक शिवशंकरन् अपने पिताजी को क्या कहती थीं?-अप्पा

२४. अप्पा की मातृभाषा कौनसी थी?-तमिल

२५. डॉ. पलक शिवशंकरन् के पिताजी कौनसा काम करते थें?-मिल में मैकेनिक

२६. डॉ. पलक शिवशंकरन् की मां कहां पर कार्यरत थीं?-कॉरपोरेशन के स्कूल में अध्यापक

२७. डॉ. पलक शिवशंकरन् को उसके सहपाठी कौनसे नाम से पुकारते थे?-पल्ली

२८. डॉ. पलक शिवशंकरन् की बडी बहन का नाम क्या था?-बब्बो

२९. डॉ. पलक शिवशंकरन् की छोटी बहन का नाम क्या था?-सब्बू

३०. सब्बू के पति का नाम क्या था?-राजन

३१. राजन कौनसा काम करता था?-फोटोग्राफर था

३२. डॉ. पलक शिवशंकरन् को कौनसा मौसम अधिक अच्छा लगता था?-बरसात का

३३. बब्बो के पति कहाँ/कौनसे पद पर काम करते थे?-मद्रास में/रेलवे में क्लर्क के पद पर

३४. हिंदी के मास्टर ने डॉ. पलक का कौनसा नाम रख दिया था?-उडनखटोला

३५. डॉ. पलक शिवशंकरन् किसे अपना गॉड फादर मानती हैं?-डॉ. देवांगी को

३६. डॉ. देवांगी के पति का नाम क्या था?-अशोक बाफना

३७. डॉ. देवांगी के बेटे का नाम क्या है?- सुहास

३८. डॉ. देवांगी किसकी ओर आकर्षित होती हैं?-डॉ. बिजॉय घोष

३९. डॉ. बिजॉय घोष के मतानुसार स्वास्थ्य के लिए नायाब मेडिसिन कौनसा है?-हँसना

४०. डॉ. देवांगी कौनसे कॉलेज में/ कौनसा विषय पढाती हैं?- गांधी कॉलेज में/लिट्रेचर

४१. डॉ. देवांगीजी ने कौनसी संस्था की स्थापना की थी?-'सहयोग' की

४२. डॉ. देवांगी 'सहयोग' की जिम्मेदारी किसे सौंपती हैं?-डॉ. पलक को

४३. 'सहयोग' संस्था कहाँ पर काम करती थी?-गांधीनगर के स्लम में

४४. गांधीनगर में कितने परिवार रहते हैं?-पांच हजार

४५. गांधीनगर की आबादी कितनी है?-पच्चीस-तीस हजार।

४६. 'सहयोग' संस्था के लिए महिला मेंबर हर महीने कितने रूपये जमा करती थीं?-दस रूपये

४७. 'सहयोग' संस्था के लिए डॉ. पलक हर महीने कितने रूपये जमा करती थीं?-ढाई सौ रूपये

४८. 'सहयोग' संस्था के लिए डॉ. देवांगी हर महीने कितने रूपये जमा करती थीं?-पाँच सौ रूपये

४९. 'सहयोग' संस्था के लिए जमा होनेवाली राशि को क्या कहा जाता था?-सहयोग धन

५०. डॉ. पलक शिवशंकरन् का सहपाठी प्रशांत कहाँ से आया है?-अमरीका से

५१. डॉ. पलक शिवशंकरन् ने किसकी शादी की गोल्डन जुबली मनाई थी?-अप्पा-अम्मा की।

५२. एम.एस.सी. पास करने के बाद डॉ. पलक शिवशंकरन् को कॉलेज में कौनसे पद पर नौकरी मिली थी?-डेमोन्स्ट्रेटर

५३. डॉ. पलक शिवशंकरन् के प्रिन्सिपल कौन थें?-सदाशिवन

५४. मुंबई में कौनसा महीना सबसे अधिक गरम होता है?-अक्टूबर महीना

५५. सच्चे समाजसेवी के लिए पहली शर्त कौनसी होती है?-विनयशील होना

५६. फातिमा की जमानत किसने दी थी?-डॉ. पलक शिवशंकरन् ने